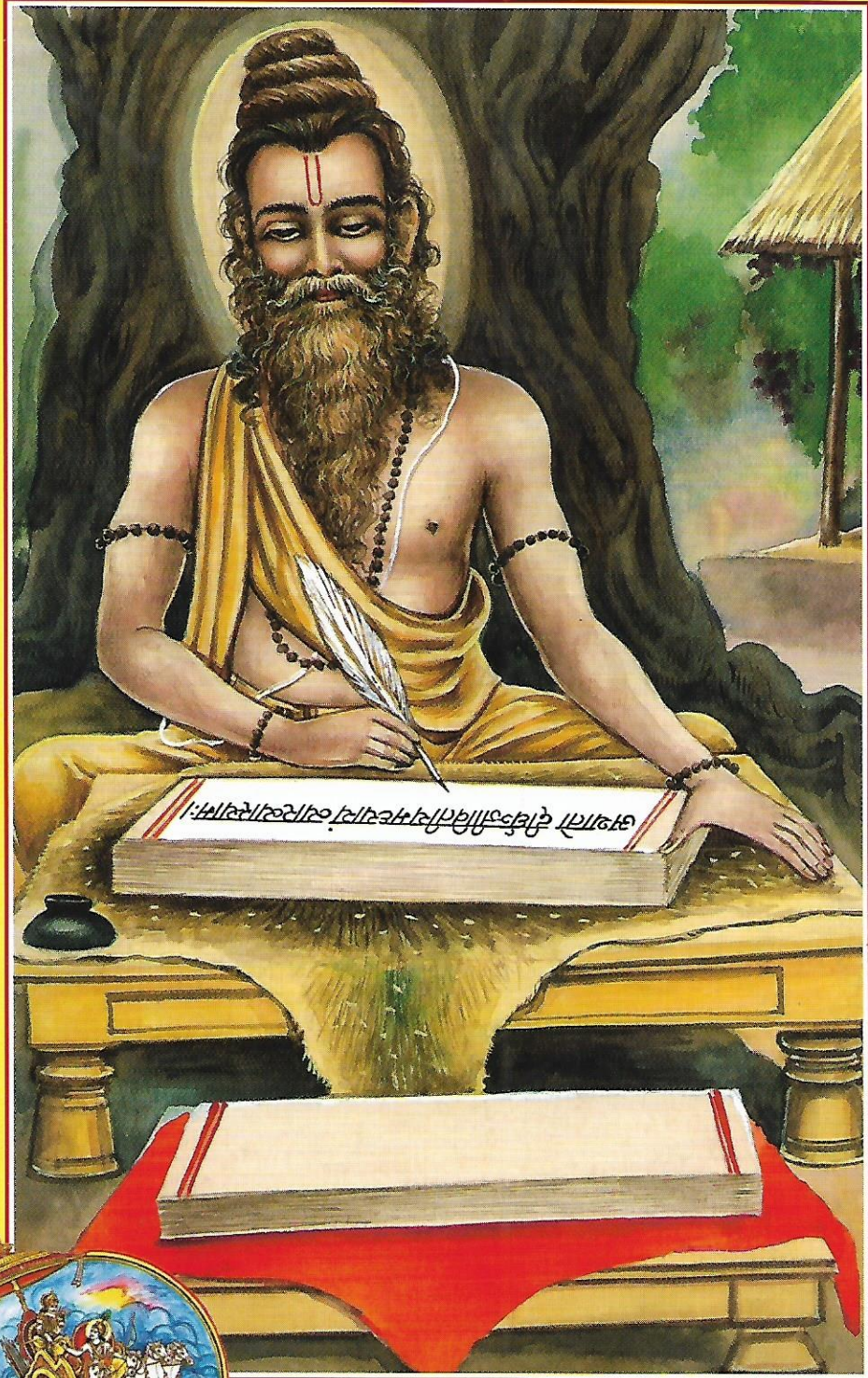


महर्षि वाल्मीकिप्रणीत

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण

[सचित्र, हिंदी-अनुवादसहित] (द्वितीय खण्ड)



गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥

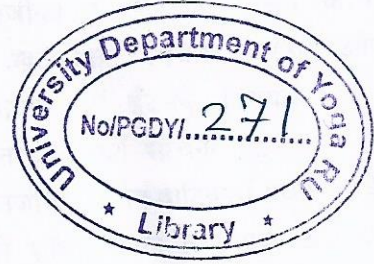
महर्षिवाल्मीकिप्रणीत

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण

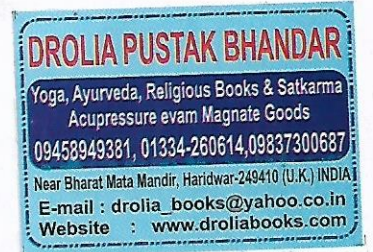
सचित्र, हिंदी-अनुवादसहित

[द्वितीय खण्ड]

(सुन्दरकाण्डसे उत्तरकाण्डतक)



त्वमेव माता च पिता त्वमेव
 त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
 त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
 त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥



गीताप्रेस, गोरखपुर

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण खण्ड २ की विषय-सूची

सर्ग	विषय	पृष्ठ-संख्या	सर्ग	विषय	पृष्ठ-संख्या
	(सुन्दरकाण्डम्)				
१-	हनुमान्जीके द्वारा समुद्रका लङ्घन, मैनाकके द्वारा उनका स्वागत, सुरसापर उनकी विजय तथा सिंहकाका वध करके उनका समुद्रके उस पार पहुँचकर लङ्काकी शोभा देखना	१७		मनमें धर्मलोपकी आशङ्का और स्वतः उसका निवारण होना.....	६२
२-	लङ्कापुरीका वर्णन, उसमें प्रवेश करनेके विषयमें हनुमान्जीका विचार, उनका लघुरूपसे पुरीमें प्रवेश तथा चन्द्रोदयका वर्णन.....	३२	१२-	सीताके मरणकी आशङ्कासे हनुमान्जीका शिथिल होना; फिर उत्साहका आश्रय लेकर अन्य स्थानोंमें उनकी खोज करना और कहीं भी पता न लगनेसे पुनः उनका चिन्तित होना	६५
३-	लङ्कापुरीका अवलोकन करके हनुमान्जीका विस्मित होना, उसमें प्रवेश करते समय निशाचरी लङ्काका उन्हें रोकना और उनकी मारसे विह्वल होकर उन्हें पुरीमें प्रवेश करनेकी अनुमति देना	३६	१३-	सीताजीके नाशकी आशङ्कासे हनुमान्जीकी चिन्ता, श्रीरामको सीताके न मिलनेकी सूचना देनेसे अनर्थकी सम्भावना देख हनुमान्जीका न लौटनेका निश्चय करके पुनः खोजनेका विचार करना और अशोकवाटिकामें ढूँढ़नेके विषयमें तरह-तरहकी बातें सोचना.....	६८
४-	हनुमान्जीका लङ्कापुरी एवं रावणके अन्तःपुरमें प्रवेश	४०	१४-	हनुमान्जीका अशोकवाटिकामें प्रवेश करके उसकी शोभा देखना तथा एक अशोक-वृक्षपर छिपे रहकर वहाँसे सीताका अनुसन्धान करना.....	७३
५-	हनुमान्जीका रावणके अन्तःपुरमें घर-घरमें सीताको ढूँढ़ना और उन्हें न देखकर दुःखी होना	४२	१५-	वनकी शोभा देखते हुए हनुमान्जीका एक चैत्यप्रासाद (मन्दिर)-के पास सीताको दयनीय अवस्थामें देखना, पहचानना और प्रसन्न होना	७७
६-	हनुमान्जीका रावण तथा अन्यान्य राक्षसोंके घरोंमें सीताजीकी खोज करना.....	४५	१६-	हनुमान्जीका मन-ही-मन सीताजीके शील और सौन्दर्यकी सराहना करते हुए उन्हें कष्टमें पड़ी देख स्वयं भी उनके लिये शोक करना	८१
७-	रावणके भवन एवं पुष्पक विमानका वर्णन..	४८	१७-	भयंकर राक्षसियोंसे घिरी हुई सीताके दर्शनसे हनुमान्जीका प्रसन्न होना.....	८३
८-	हनुमान्जीके द्वारा पुनः पुष्पक विमानका दर्शन.....	५०	१८-	अपनी स्त्रियोंसे घिरे हुए रावणका अशोक-वाटिकामें आगमन और हनुमान्जीका उसे देखना	८६
९-	हनुमान्जीका रावणके श्रेष्ठ भवन, पुष्पक विमान तथा रावणके रहनेकी सुन्दर हवेलीको देखकर उसके भीतर सोयी हुई सहस्रों सुन्दरी स्त्रियोंका अवलोकन करना	५२	१९-	रावणको देखकर दुःख, भय और चिन्तामें डूबी हुई सीताकी अवस्थाका वर्णन.....	८८
१०-	हनुमान्जीका अन्तःपुरमें सोये हुए रावण तथा गाढ़ निद्रामें पड़ी हुई उसकी स्त्रियोंको देखना तथा मन्दोदरीको सीता समझकर प्रसन्न होना	५८			
११-	वह सीता नहीं है—ऐसा निश्चय होनेपर हनुमान्जीका पुनः अन्तःपुरमें और उसकी पानभूमिमें सीताका पता लगाना, उनके				

सर्ग	विषय	पृष्ठ-संख्या	सर्ग	विषय	पृष्ठ-संख्या
२०-	रावणका सीताजीको प्रलोभन	९०			
२१-	सीताजीका रावणको समझाना और उसे श्रीरामके सामने नगण्य बताना	९३		'श्रीराम कब मेरा उद्धार करेंगे' यह उत्सुक होकर पूछना तथा हनुमान्जीका श्रीरामके सीताविषयक प्रेमका वर्णन करके उन्हें सान्त्वना देना	१३४
२२-	रावणका सीताको दो मासकी अवधि देना, सीताका उसे फटकारना, फिर रावणका उन्हें धमकाकर राक्षसियोंके नियन्त्रणमें रखकर स्त्रियों-सहित पुनः महलको लौट जाना	९५	३७-	सीताका हनुमान्जीसे श्रीरामको शीघ्र बुलानेका आग्रह, हनुमान्जीका सीतासे अपने साथ चलनेका अनुरोध तथा सीताका अस्वीकार करना	१३७
२३-	राक्षसियोंका सीताजीको समझाना.....	९९	३८-	सीताजीका हनुमान्जीको पहचानके रूपमें चित्रकूट पर्वतपर घटित हुए एक कौएके प्रसङ्गको सुनाना, भगवान् श्रीरामको शीघ्र बुला लानेके लिये अनुरोध करना और चूड़ामणि देना	१४२
२४-	सीताजीका राक्षसियोंकी बात माननेसे इनकार कर देना तथा राक्षसियोंका उन्हें मारने-काटनेकी धमकी देना	१००	३९-	चूड़ामणि लेकर जाते हुए हनुमान्जीसे सीताका श्रीराम आदिको उत्साहित करनेके लिये कहना तथा समुद्र-तरणके विषयमें शङ्कित हुई सीताको वानरोंका पराक्रम बताकर हनुमान्जीका आश्वासन देना	१४७
२५-	राक्षसियोंकी बात माननेसे इनकार करके शोक-संतप्त सीताका विलाप करना	१०४	४०-	सीताका श्रीरामसे कहनेके लिये पुनः संदेश देना तथा हनुमान्जीका उन्हें आश्वासन दे उत्तर दिशाकी ओर जाना	१५१
२६-	सीताका करुण-विलाप तथा अपने प्राणोंको त्याग देनेका निश्चय करना.....	१०५	४१-	हनुमान्जीके द्वारा प्रमदावन (अशोक-वाटिका)-का विध्वंस.....	१५३
२७-	त्रिजटाका स्वप्न, राक्षसोंके विनाश और श्रीरघुनाथजीकी विजयकी शुभ सूचना.....	१०९	४२-	राक्षसियोंके मुखसे एक वानरके द्वारा प्रमदावनके विध्वंसका समाचार सुनकर रावणका किंकर नामक राक्षसोंको भेजना और हनुमान्जीके द्वारा उन सबका संहार....	१५५
२८-	विलाप करती हुई सीताका प्राण-त्यागके लिये उद्यत होना	११३	४३-	हनुमान्जीके द्वारा चैत्यप्रासादका विध्वंस तथा उसके रक्षकोंका वध	१५८
२९-	सीताजीके शुभ शकुन	११५	४४-	प्रहस्त-पुत्र जम्बुमालीका वध	१६०
३०-	सीताजीसे वार्तालाप करनेके विषयमें हनुमान्जीका विचार करना.....	११६	४५-	मन्त्रीके सात पुत्रोंका वध.....	१६२
३१-	हनुमान्जीका सीताको सुनानेके लिये श्रीराम-कथाका वर्णन करना.....	११९	४६-	रावणके पाँच सेनापतियोंका वध.....	१६३
३२-	सीताजीका तर्क-वितर्क	१२१	४७-	रावणपुत्र अक्षकुमारका पराक्रम और वध..	१६६
३३-	सीताजीका हनुमान्जीको अपना परिचय देते हुए अपने वनगमन और अपहरणका वृत्तान्त बताना	१२२	४८-	इन्द्रजित् और हनुमान्जीका युद्ध, उसके दिव्यास्त्रके बन्धनमें बँधकर हनुमान्जीका रावणके दरबारमें उपस्थित होना	१७०
३४-	सीताजीका हनुमान्जीके प्रति संदेह और उसका समाधान तथा हनुमान्जीके द्वारा श्रीरामचन्द्रजीके गुणोंका गान	१२४			
३५-	सीताजीके पूछनेपर हनुमान्जीका श्रीरामके शारीरिक चिह्नों और गुणोंका वर्णन करना तथा नर-वानरकी मित्रताका प्रसङ्ग सुनाकर सीताजीके मनमें विश्वास उत्पन्न करना.....	१२७			
३६-	हनुमान्जीका सीताको मुद्रिका देना, सीताका				



GITA PRESS, GORAKHPUR [SINCE 1923]

गीताप्रेस, गोरखपुर— २७३००५

फोन : (०५५१) २३३४७२१, २३३१२५०, २३३३०३०